रात्रि क्लास 3/9/62 :– कई बच्चे ब्र॰वि॰शं॰ के पार्ट में मूँझते हैं। ब्र॰वि॰शं॰ की ज़रूर सोल तो हैं ना। यह तो ज़रूर समझना चाहिए। चित्र भी दिखलाते हैं। मुख्य चित्र है ब्रह्मा का। वहाँ बच्चियाँ जाती हैं, देखती हैं, उन्हों से मिलती हैं, उठती–बैठती हैं। बाकी वे खाते क्या हैं– यह प्रश्न नहीं उठ सकता; सूक्ष्म शरीर है ना! जैसे घोस्ट भी देखने में आते हैं। फिर उनसे पूछेंगे क्या कि तुम क्या खाते हो! पहले मुख्य बात है अपनी पढ़ाई में रहना। हमारा लक्ष्य है– 5 विकारों पर जीत पानी है। मुख्य है नॉलेज। माया पर जीत पा, पद पाना है। ज्यादा प्रश्नों में न ले जाना चाहिए। बोलो, पहले 5 विकारों का दान दो। पहले तो बाप के साथ लव चाहिए। सो बाबा सदा कहते हैं, एक बात पर पहले निश्चय कराओ। बाकी इन प्रश्नों से कुछ लाभ नहीं। वाह्यात प्रश्न बहुत पूछते। अपना काम है बाप से वर्सा लेना, योग में रहना है और नॉलेज धारण करनी है और बलि चढ़ना है। बलि चढ़ने की रसम भारत में ही है, विलायत में नहीं है। भारत में ही शिव पर या काली पर बलि चढ़ते हैं। बच्चों में पकड़ने की युक्ति होनी चाहिए, प्रश्न उठाने ही न देना चाहिए। बोलो, पहले तुम बाबा से योग लगाओ। वो मोस्ट लवली से प्यार बहुत चाहिए। उनसे प्यारी वस्तु और कोई नहीं। उनकी याद से विकर्म विनाश होते हैं। मनुष्य मेहनत करते मुक्ति लिए। जीवनमुक्ति का किसको पता ही नहीं। सन्यासियों के सुख कागविष्टा समान कहने से राजाएँ अपनी राजाई छोड़ सन्यास लेते हैं और तुम फिर राजाई लेते हो। उन्हों को यह पता ही नहीं, यह दुख माया के राज्य में है। वहाँ ऐसे दुख की बात है ही नहीं। श्वासों श्वास योग लगा रहे, यह है अन्तिम अवस्था। उसी समय डरके मारे याद ज्यादा करना पड़ता है, बुद्धियोग लगा रहे केवल।

ॐ